IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''इलाहाबाद शहर की मलिन बस्तियों में निवास करने वाले माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शक्षिक रूचि का अध्ययन''

डॉ0 शिवानी निगम
एसोसिएट प्रोफेसर
डी0ए0वी0पी0जी0 कॉलेज, कानपुर

विमल कुमार दिनकर
शोधार्थी
डी0ए0वी0पी0जी0 कॉलेज, कानपुर

सारांश– यदि हम देश की मलिन बस्तियों की स्थिति के बार में बात करते हैं तो निष्कर्ष यह निकल कर आता है की आजादी के सत्तर साल के बाद भी इन मलिन बस्तियों की स्थिति में बहुत ज्यादा सुधार नहीं हुआ है आज भी मलिन बस्तियों की हालात बद से बदतर है। झुग्गी झोपड़ियो, खपरैल घर, कच्चे मकान, पक्के मकान, बदबूदार नाली तथा अस्वास्थकर जीवन आदि मलिन बस्तियों की पहचान है। मलिन बस्तियों में रहने वाले विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति, शैक्षिक विकास, शैक्षिक रूचि तथा व्यावसायिक अभिवृत्ति बहुत अच्छी नहीं है जिन अभिभावकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति ठीक भी है अर्थात भौतिक संसाधनों की उपलब्धता भी है या जरूरतों को पूरा भी कर लेते हैं। लेकिन अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति कम ध्यान देते हैं परन्तु कुछ अभिभावक संसाधनों से वंचित होते हुए भी तथा अशिक्षित होते हुए भी अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक पाए गये परन्तु ज्यादातर शिक्षित अभिभावकों ने अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक पाए गये तथा अशिक्षित अभिभावक अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति कम जागरूक पाए गये। शोधकर्ता ने इलाहाबाद शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाले विधार्थियों की शैक्षिक रुचियों का अध्ययन करने के लिए आंकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया तथा आंकड़ों के विश्लेषण द्वारा प्राप्त निष्कर्ष से पता चलता है कि अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालया के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रुचियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इसका कारण माता–पिता की शिक्षा, पारिवारिक स्थिति, शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता का अभाव, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, जागरूकता का अभाव तथा वातावरण का प्रभाव हो सकता है।

मुख्य शब्द– मलिन बस्ती, माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, शैक्षिक रूचि तथा अनुदानित एवं स्ववित्तपोशित विद्यालय।

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांवेगिक, नैतिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास होता है। शिक्षा किसो समाज में सदैव चलने वाली सोदेश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान, बोध व कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। और इस प्रकार सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। शिक्षा को सदैव से ही समाज तथा राष्ट्र की प्रगति तथा महत्वपूर्ण साधन के रूप में स्वीकार किया जाता है। यही कारण है कि प्राचीन काल से आधुनिक काल तक सदैव ही शिक्षा को सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास की दृष्टि से सम्मानजनक स्थान दिया जाता रहा है।

हमारे देश में मलिन बस्तियों की स्थिति लगभग सत्तर साल की आजादी के बाद भी वैसी की वसी ही है। इन मलीन बस्तियों की स्थितियों में बहुत ज्यादा सुधार नहीं हुआ है। बहुत सी सरकार बदली, बहुत सी योजनाएँ लागू की गयी लेकिन मलिन बस्तियों की स्थिति में कोई सुधार नहीं आया। भारत सरकार द्वारा (नेशनल फूड सेक्योरिटी एक्ट) भारतीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम योजना एवं वर्तमान में प्रधानमंत्री भाहरी आवास विकास योजनाएं चलायी जा रही हैं। जिनका लाभ इन मलीन बस्तियों में रहने वाले लोगों को नहीं मिल पाता है बल्कि अन्य लोगों को मिल जाता है। इसका कारण शिक्षा और जागरूकता का अभाव। और इन मलिन बस्तियों की ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाता है। मलिन बस्तियॉ शहरों में स्थित ऐसे क्षेत्र होते हैं जिनमें निम्न स्तर की आवास व्यवस्था होती है। मलिन बस्तियाँ सदैव एक ऐसा क्षेत्र होता है जहॉ पर रहने योग्य मकान न हो, पीने योग्य स्वच्छ पानी न हो, अस्वास्थ्यकर वातावरण हो, जो उनकी नैतिकता के लिए हानिकारक है। इस प्रकार मलिन बस्तियॉ शहर की घनी आवादी वाला बसा हुआ क्षेत्र होता है जहाँ निम्न आर्थिक स्तर पर उच्च अपराध दर पायी जाती हैं। विद्वानों इस क्षेत्र को ''शहर का कैंसर तथा पत्थर का रेगिस्तान कहा है।'' मसानी कहते हैं कि ''विश्व की रचना ईश्वर ने की है नगरां की मानव ने तथा मलिन बस्तियों की शैतानों ने।''

- ❖ मलीन बस्ती के मकानों, चौगानों व गलियों की बनावट अति प्राचीन है जो अवनति की ओर दिखाई देती ह।
- ❖ मलिन बस्तियों में गरीब लोग निवास करते हैं यहाँ की सामिजिक–आर्थिक स्थिति का स्तर निम्न प्रकार का होता है।
- ❖ मलिन बस्ती घनी आवादी वाला क्षेत्र होता है।
- ❖ जहाँ पर सामाजिक संगठन पाया जाता है और विभिन्न प्रकार के लोग निवास करते हैं।
- ❖ मलीन बस्ती स्वास्थ्य एवं साफ–सफाई की सार्वजनिक सेवाओं से वंचित रहती हैं।
- ❖ यहाँ के लोगों में नैतिकता का अभाव पाया जाता है जैसे– बाल अपराध, वैश्यावृत्ति जैसी अनेक घटनाएं देखने को मिलती हैं।
- ❖ मलिन बस्ती प्रायः ऐसा क्षेत्र होता हैं, जहाँ उच्च स्तर की निवासीय गतिशीलता पायी जाती हैं।

मलिन बस्तियों का उदय– प्रत्येक दिन हजारों लोग काम की तलाश म शहरों की ओर पलायन करते ह। इनमें से अधिकतर शहरों की मलिन बस्तियों में रहते हैं। ये साल दर साल रहते चले जाते हैं परन्तु अपने लिए घर नहीं जुटा पाते हैं और झुग्गी–झोपड़ियों में ही रहकर जीवन गुजर–बसर करते हैं। अध्ययनों से पता चलता है कि गरीब एवं मलिन बस्तियों में रहने वाले लोग कर्ज और सामाजिक–आर्थिक स्थिरता के दुष्चक्र में फंसे रहते हैं। इस प्रकार इनके जीवन में कभी सुधार नहीं हो पाता है।

औद्योगिक क्रांन्ति– मलिन बस्तियों की उत्पत्ति में औद्योगिक क्रांन्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है। ग्रामीण व्यक्ति रोजगार की तलाश में शहरों की ओर आते हैं। वह किसी मिल, फैक्टरी, कारखाना या किसी अन्य प्रकार का श्रम करके अपना पेट भरता है। लेकिन उसे रहने के लिए मलिन या गंदी बस्तियों का ही सहारा लेना पड़ता है। वह अधिक से अधिक धन अर्जित करने की कल्पना सजाए आता है लेकिन निराशा ही हाथ लगती है।

शिक्षा और जागरूकता का अभाव– शिक्षा और जागरूकता के अभाव में मलिन बस्तियों के विकास में वद्धि हुई है। मलिन बस्तियों में वे व्यक्ति रहते हैं जो निर्धनता के शिकार हैं। और गन्दी बस्तियों में रहने वाले व्यक्तियों से भी अनभिज्ञ है जहाँ सुविधाएं नाम की काई चीज नहीं हैं। बीमारियाँ और सामाजिक बुराइयाँ असोमित हैं फिर भी यहाँ लोग इस लिए आते हैं कि किराया नाम मात्र का देना पड़ता है। शिक्षा के अभाव में भोजन के पौष्टिक तत्वों क संरक्षण की विधि से लोग वाकिफ नहीं हैं। भोजन में पकाया पानी या माड़ आदि निकाल कर न जाने कितने पौष्टिक तत्व वे स्वंय नष्ट कर देते हैं। शिक्षा और जागरूकता के अभाव में अपने ही हाथों से अपनी ही

क्या अपनी अगली पीढो का भी हानि कर रहे हैं।

शैक्षिक स्थिति–आज भी मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की शिक्षा सामान्य लोगों की शिक्षा में अपेक्षाकृत बहुत निम्न है। वर्तमान समय में शिक्षा इतनी मंहगी होती जा रही है कि आम लोगों के बस की बात नहीं है हालांकि राज्य सरकारें ि"ाक्षा पर बहुत सी योजनाएं ला रही हैं । लेकिन इन मलिन बस्तियों के बच्चों को शिक्षा का लाभ नहीं मिल पाता है। मलिन बस्तियों में रहने वाले शिक्षित अभिभावकों के बच्चे कुछ हद तक योजनाओं का लाभ लेकर शिक्षा प्राप्त कर पा रहे हैं। लेकिन अशिक्षित अभिभावक शिक्षा के प्रति जागरूक कम हैं। जिससे वे अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दिला पा रहे हैं। वर्तमान समय में शिक्षा ज्ञान के साथ–साथ आर्थिक विकास का भी रास्ता दिखाती है शिक्षा वह चॉभी है जो विकास के सभी बन्द दरवाजे खोल सकती है। किसी भी देश तथा समाज की प्रगति का सबसे महत्वपूर्ण मापदण्ड शिक्षा को माना जाता है। किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था जितनी अच्छी होगी उस देश का नागरिक उतना ही खुशहाल होगा। आजादी के लगभग सत्तर साल बाद भी समाज में जन्म आदि कारणों से ढेर सारे बन्धन थोप दिये जाते हैं। शिक्षा उनसे ऊपर उठकर नये जीवन जीने का तरीका सिखाती है। शिक्षा के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियाँ, अन्धविश्वासों, अवैधानिक नियमों और अनुचित परम्पराओं आदि से छुटकारा मिले और विकास की ओर अग्रसर हो। मलिन बस्तियों में मौजूदा हालात की जाँच की जाए तो तस्वीर बहुत ही भयावह होगी।

अध्ययन की आवश्यकता– किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था उस देश की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आधार पर निर्धारित होतो है यह बात सत्य है कि जटिल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का बालकों के शैक्षिक विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। जब की प्रतिकूल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का बालकों के शैक्षिक एवं व्यावसायिक रुचियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है ऐसे परिवारों के बच्चे विद्यालय में अपने साथियों के बीच पहुचते हैं तो उनमें हीन भावना या कुंठा पैदा हो जाती है। समाज के अन्दर बहुत सी भिन्नताए हैं ऊँच–नीच, अमीरी–गरीबी तथा धार्मिकता की भावना बालको में मानसिक तनाव पैदा कर देती हैं जो एक स्वस्थ मानव समाज के लिए अच्छा नहीं है। विनीता (२००७) ने मलिन बस्तियों की परिस्थितियों का उनके बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव (लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों के विशेष सन्दर्भ में) अध्ययन किया और पाया की परिवार की सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का उनके बच्चों के शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है तथा मलिन बस्तियों की पारिवारिक आय उनके कुपोषण, खराब स्वास्थ्य, शारीरिक स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति चेतना में कमी के कारण उनके बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है तथा अभिभावकों की शिक्षा में रूचि न होने से वहां का वातावरण अनुकूल न होना तथा शैक्षिक साधनों की उपलब्धता का अभाव उनके बच्चों की शिक्षा को प्रभावित करता है। वर्मा, (२०१०) ने इलाहाबाद के स्लम एरियाज में निवास करने वाले बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक विकास का उनके माता–पिता या अभिभावकों का शैक्षिक स्तर इंटरमीडिएट व उनकी वार्षिक आय के सन्दर्भ में अध्ययन किया जिसमें पाया कि जिन अभिभावकों या माता–पिता का शैक्षिक स्तर इंटरमीडिएट या इससे नीचे था उनका शैक्षिक विकास भी अपेक्षाकृत निम्न था । यादव, (२०१०) ने इलाहाबाद मण्डल की मलिन बस्तियों के पाँच सौ परिवारों के अभिभावकों का शैक्षिक, आर्थिक और व्यावसायिक स्थिति का अध्ययन किया और पाया कि जिन अभिभावकों का शैक्षिक स्तर जैसे–जैसे बढ़ता गया उनके बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुइ। जो अभिभावक निरक्षर थे वे अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति कम जागरूक पाये गये। मलिन बस्तियों में रहने वाले प्राथमिक स्तर पर शिक्षित अभिभावकों के लगभग 20 प्रतिशत बच्चे निरक्षर हैं, प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने वालों की संख्या 30.58 प्रतिशत है। इनमे 14.32 प्रतिशत बालक 16.26 प्रति"ात बालिकाएं हैं। हाईस्कूल स्तर पर 04 प्रतिशत तथा इण्टरमीडिएट स्तर पर 02 प्रतिशत छात्र ही अपनी शिक्षा जारी रख पाते हैं। स्नातक स्तर और परास्नातक स्तर पर उनकी संख्या न के बराबर है। मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों को शिक्षा ही नहीं बल्कि बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मलिन बस्तियों में रहने वाले लोग बुनियादी सुविधाओं जैसे– पानी, बिजली, स्वास्थ्य, सड़क आदि से वंचित रह जाते हैं। अध्ययन में यह पाया गया है कि जिन अभिभावकों की शैक्षिक स्थिति ठीक है उनके बच्चे पढ़ने में ठीक हैं, लेकिन जिन अभिभावकों की भौक्षिक स्थिति ठीक नहीं है अर्थात निरक्षर हैं उनके बच्चों कि शिक्षा ठीक नही है। सिंह, (२०१३) ने स्नातक स्तर पर विभिन्न वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक रूचि तथा व्यावसायिक रूचि के सन्दर्भ में एक तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि स्नातक स्तर पर व्यावसायिक रूचि वाले छात्रों की शैक्षिक रूचि

से तुलना करने पर उनकी व्यावसायिक एवं शैक्षिक रुचियों जिसमें तकनीकी विषयों के प्रति रूचि लगभग समान है। शहरी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचि का स्तर अत्यंत उच्च पाई गयी किन्तु विज्ञान एवं तकनीकी तथा वाणिज्य विषयों के प्रति उनका दृष्टिकोण उच्च था अधिकांश छात्रों द्वारा चिकित्सा, इंजीनियरिंग एवं कंप्यूटर क्षेत्र को अधिक उपयोगी बताया।

उपरोक्त सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकलता है कि देश, में शिक्षा के विकास का विभिन्न समूहों, कक्षा, वर्ग, लिंग, घर एवं विद्यालय का वातावरण, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ एवं शैक्षिक उपलब्धि आदि के सन्दर्भ में काफी शोध कार्य किया जा चुका है। परन्तु भारतीय परिपेक्ष्य में सम्बंधित अध्ययन की कमी है अतः शोधकर्ता क मन में निम्नांकित प्रश्न उभर कर आया– मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के विधार्थियों की शैक्षिक रुचियों में क्या अंतर है ? उपरोक्त प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने हेतु शोधकर्ता ने मलिन बस्तियों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक रुचियों में अन्तर ज्ञात करने के सन्दर्भ में अध्ययन करने का प्रयत्न किया है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य–

1. मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं–

1. मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की शैक्षिक अभिरूचि समान है।
2. मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों की भौक्षिक अभिरूचि समान है।
3. मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की भौक्षिक अभिरूचि समान है।

शोध विधि– प्रस्तुत अध्ययन में सवेंक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए साधारण यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है जिसमें इलाहाबाद नगर के मलिन बस्तियों के कुल 200 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को न्याद"र्ा के रूप में चयन किया गया जिसमें माध्यमिक स्तर के 100 छात्र एवं 100 छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

जनसंख्या– प्रस्तुत अध्ययन में जनसंख्या से अभिप्राय इलाहाबाद नगर के समस्त अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत मलिन बस्तियों के बालक एवं बालिकाओं को जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत शोध उपकरण– प्रस्तुत अध्ययन में मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि जानने के लिए डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित ''शैक्षिक रूचि प्रपत्र'' का प्रयोग किया गया। और शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया है कि वर्तमान समय में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की रूचि का झुकाव किस क्षेत्र में सर्वाधिक है। डॉ0 एस0पी0 कुलश्रेष्ठ के शैक्षिक रूचि प्रपत्र के अध्ययन

शैक्षिक रूचि	अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत मलिन बस्तियों के छात्र		अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत मलिन बस्तियों की छात्राएं		
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण(0.5) सार्थकता स्तर
AG	3.45	2.99	2.26	2.71	2.25
CO	4.80	3.13	2.65	2.80	5.24
FA	3.06	2.77	4.16	3.07	2.68
HS	2.52	2.00	4.75	3.76	5.30
HU	6.05	3.26	5.36	3.07	1.60
SC	5.16	3.60	3.90	3.53	2.65
TE	5.21	2.49	2.89	3.19	5.80

में प्रयोग किये गये मुख्य क्षेत्र निम्नवत है।

1. कृषि(Agriculture), 2. वाणिज्य(Commerce), 3. ललितकला(FineArt), 4. गृहविज्ञान(HomeScience),

5. मानविकी(Humanities), 6. विज्ञान(Science), 7. तकनीकि(Techonology)

आंकड़ों का संकलन– शोध निर्देशिका के आदेशानुसार शोधार्थी इलाहाबद शहर के चयनित मलिन बस्तियों में जाकर विद्यार्थियों के अभिभावकों से मिलकर सामंजस्य स्थापित कर विद्यार्थियों को भौक्षिक रूचि के महत्व को बताया फिर शैक्षिक रूचि प्रपत्र भरने को दिया और विद्यार्थियों द्वारा प्रपत्र भरने के उपरान्त वापस संकलित कर लिया गया। प्रपत्र विधि से जॉच कर अंक प्रदान किया गया। प्रपत्र के अनुसार 0–1 कम रूचि, 02–03 औसत से कम रूचि, 04–05 औसत रूचि, 06–09 औसत से अधिक रूचि और 10–14 अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उच्च रूचि के होते हैं ।

आंकड़ों का विश्लेषण तथा विवेचन– आंकड़ों का विश्लेषण तथा विवेचन से तात्पर्य है कि आंकड़ों का संकलन, संकेतीकरण, संवर्गीकरण, सारणीयन तथा विश्लेषण से है।

तालिका संख्या– 01

मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की शैक्षिक रूचि के टी–परीक्षण परिणामों का सारांश।

उपरोक्त तालिका को देखने से प्रतीत होता है कि अनुदानित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक रूचियों में मानवशास्त्र विषय में सार्थक अन्तर नहीं है। जब कि कृषि, वाणिज्य, ललित कला, गृह विज्ञान, विज्ञान तथा तकनीकि विशयों में सार्थक अन्तर है। अतः भून्य परिकल्पना निरस्त होती है।

तालिका संख्या– 02

मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक रूचि के टी–परीक्षण परिणामों का सारां"ा।

शैक्षिक रूचि	अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत मलिन बस्तियों के छात्र		स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत मलिन बस्तियों के छात्र		
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण(0.5) सार्थकता स्तर
AG	3.75	3.19	3.20	3.37	0.83
CO	4.93	3.14	4.62	3.11	0.50
FA	3.03	2.59	3.10	3.01	0.12
HS	2.90	2.42	1.96	2.18	2.13
HU	6.29	3.43	5.69	2.96	0.95
SC	5.13	3.51	5.20	3.75	0.09
TE	5.61	4.18	4.74	3.51	1.14

उपरोक्त तालिका को देखन से स्पश्ट होता है कि अनुदानित विद्यालयों एवं स्ववित्तपोशित विद्यालयों के छात्रों की भौक्षिक रूचियों में गृह विज्ञान विशय में सार्थक अन्तर पाया गया। जब कि अन्य विशयों कृशि, वाणिज्य, ललित कला, मानव"ाास्त्र, विज्ञान एवं तकनीकि विशयों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः भून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

तालिका संख्या– 03

मलिन बस्तियों के माध्यमिक स्तर के अनुदानित और स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की शैक्षिक रूचि के टी–परीक्षण परिणामों का सारां"ा।

शैक्षिक रूचि	अनुदानित विद्यालयों में अध्ययनरत मलिन बस्तियों की छात्राएं		स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत मलिन बस्तियों की छात्राएं		
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	टी–परीक्षण(0.5) सार्थकता स्तर
AG	1.95	2.33	2.98	3.33	1.58
CO	2.35	2.59	3.36	3.11	1.57
FA	4.15	3.18	4.20	2.80	0.07
HS	5.00	3.54	4.00	3.26	1.38
HU	5.45	2.71	5.13	3.76	0.42
SC	3.31	3.16	5.28	3.94	2.46
TE	2.57	3.63	3.63	3.56	1.45

उपरोक्त तालिका को देखन से स्पश्ट होता है कि अनुदानित एवं स्ववित्तपोशित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं की भौक्षिक रूचियों में विज्ञान विशय में अन्तर पाया गया। जब कि अन्य विशयों कृशि, वाणिज्य, ललित कला मानव"ाास्त्र, विज्ञान एवं तकनीकि विशयों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः भून्य परिकल्पना स्वीकृत

होती है।

निश्कर्श– इलाहाबाद भाहर की मलिन बस्तियों में रहने वाले माध्यमिक स्तर के अनुदानित और स्ववित्तपोशित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्याथियों की भौक्षिक रूचि का अध्ययन करने के लिए आंकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया तथा आंकड़ों के विभलेशण द्वारा प्राप्त निश्कर्श से पता चलता है कि अनुदानित और स्ववित्तपोशित विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की भौक्षिक रूचियों में बहुत अन्तर नहीं है। इसका कारण माता–पिता की ि"ाक्षा, जागरूकता का अभाव, सामाजिक आर्थिक स्तर तथा वातावरण का प्रभाव हो सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कुमारी, विनीता(2007) मलिन बस्तियों की परिस्थितियों का उनके बच्चों की शिक्षा पर प्रभाव (लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों के सन्दर्भ में at.shodhganga.inflibnet.ac.in
2. यादव, सियाराम (2008) अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन
3. वर्मा,ज्योति (2010)इलाहाबाद के स्लम एरियाज में निवास करने वाले बालकदृबालिकाओ के शैक्षिक विकास, at.shodhganga.inflibnet.ac.in
4. यादव, विनोद कुमार18जुलाई 2010मलिन बस्ती में ि"ाक्षा at.http://hindi.indiawaterportal.org.
5. सिंह, विकास कुमार (2013)स्नातक स्तर पर विभिन्न वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का एक तुलनात्मक अध्ययन, at.shodhganga.inflibnet.ac.in
6. भूगोल और आप 28 दिसम्बर 2017 भाहरों में मलिन बस्तियों का विकास तथा लक्षण, नई दिल्ली at.www.Geographi and you.com
7. अग्रवाल, विजय 7 फरवरी 2019 भाहरी ,गरीब एवं मलिन बस्तियों की समस्या , at.http://afeias.com.
8. मलिन बस्तियों की समस्याएं, 8जनवरी 2020 at.shodhganga.inflibnet.ac.in.
9. कुमार, राजीव, भारत में मलिन बस्तियॉ : समस्याएं एवं समाधान at.http://www.mgkvp.ac.in
10. अधिगम एवं शिक्षण, शिक्षक शिक्षा विभाग, शिक्षाशास्त्र, विद्याशाखा, हल्द्वानीः उतराखंड मुक्त विश्वविद्यालय